16092015-ls-ngp-04.qxd 09/16/2015 3:39 PM Page 1

और.... एक शेर

अपने खेतों से बिछड़ने की सज़ा पाता हूं
अब मैं राशन की क़तारों में नज़र आता हूं
- ख़लील धनतेजवी

लोकमत समाचार
तमसो मा ज्योतिर्गमय

बड़े लोगों के अभिमान से छोटे लोगों की श्रद्धा बड़ा कार्य कर जाती है. ■ दयानंद सरस्वती

संपादकीय

आवारा जानवर हवाई सुरक्षा के लिए खतरा

उपराजधानी में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय विमानतल पर लैंडिंग करते वक्त राष्ट्रपति का विमान बड़े हादसे का शिकार होने से बच गया. पायलट चौकन्ना था, उसने रन-वे से गुजरते सुअरों को देख लिया. यदि वीवीआईपी फ्लाइट की लैंडिंग के दौरान इस तरह की चूक हो सकती है तो आम यात्रियों की जान-माल के बारे में तो कोई गारंटी ली ही नहीं जा सकती. इस चूक ने एक बार फिर संबंधित अधिकारियों की उदासीनता उजागर की है. विमानतल के रखरखाव की जिम्मेदारी मिहान इंडिया लिमिटेड के हाथों में है. हवाईअड्डे की सीमा दीवार की ऊंचाई जंगली जानवरों को रोकने के लिए नाकाफी है. वह टूटी-फूटी भी है. इस गंभीर लापरवाही के बाद उससे जवाब-तलब तो किया ही जाना चाहिए. चमक-दमक वाले नागपुर हवाई अड्डे के रन-वे पर जानवरों के विचरने की यह कोई पहली घटना नहीं है. सांसद विजय दर्डा ने संसद में और नागर विमानन संसदीय सलाहकार समिति की बैठकों में भी नागपुर हवाई अड्डे की सुरक्षा को लेकर कई बार सवाल उठाए हैं, लेकिन इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाया गया हो, ऐसा मालूम नहीं पड़ता. इसके उलट, लापरवाही बार-बार उजागर होती रहती है. नागपुर ही क्यों, देश के कई हवाई अड्डों पर जंगली जानवरों की समस्या आम है. ये जानवर विमान यात्रा की सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बने हुए हैं. संभवतः हमारे देश के हवाई अड्डे ही ऐसे हैं, जहां जंगली जानवरों का विचरण करना बहुत आसान है. नागपुर रन-वे पर कुत्ते, हिरण, नील गाय और सियार जैसे जानवर पहले भी परेशानी का सबब बन चुके हैं. कई घटनाएं ऐसी हो चुकी हैं कि इनकी वजह से उड़ानों के समय में परिवर्तन करना पड़ा है. उड़ानों को घंटों स्थगित भी करना पड़ा है. भारतीय विमान तलों पर इन जानवरों के कारण विमान का संतुलन बिगड़ने से यात्रियों के घायल होने और विमानों को बड़ा नुकसान होने की घटनाएं भी हो चुकी हैं. अगर नागपुर हवाई अड्डे को एशिया के सबसे बड़े कार्गो हब के रूप में तैयार करने की योजना है तो उसकी सुरक्षा भी अचूक होनी ही चाहिए. हवाई अड्डे सर्वाधिक संवेदनशील क्षेत्र होते हैं. नागपुर हवाई अड्डा तो नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के करीब सबसे बड़े हवाई अड्डों में से एक है. अतः इसकी सुरक्षा व्यवस्था तो अभेद्य होनी ही चाहिए. इसके पूर्व में, दुर्घटनाएं होने के बाद संबंधित मंत्री और तत्कालीन मुख्यमंत्रियों की ओर से सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद करने के आश्वासन आते रहे हैं, लेकिन न तो आवारा जानवरों का रन-वे पर आना बंद हुआ, न उनसे जुड़े हादसे बंद हुए हैं. एक ओर राष्ट्रपति नागपुर को रहने के लिए 'बेस्ट' शहर घोषित कर रहे हैं, दूसरी ओर उन्हीं का विमान हवाई अड्डा प्रबंधन की लापरवाही का शिकार होता हो तो यह विडंबना ही है. ■■

योद्धा

लघुकथा

असगर वजाहत

किसी देश में एक बहुत बड़ा योद्धा रहता था. वह कभी किसी से न हारा था. उसे घमंड हो गया था. वह किसी को कुछ न समझता था. एक दिन उसे एक दरवेश मिला. दरवेश ने उससे पूछा, 'तू इतना घमंड क्यों करता है?'

योद्धा ने कहा, 'संसार में मुझ जैसा वीर कोई नहीं है.'

दरवेश ने उससे कहा, 'ऐसा तो नहीं है.'

योद्धा को क्रोध आ गया, 'तो बताओ, पूरे संसार में ऐसा कौन है, जिसे मैं हरा नहीं सकता हूं.'

दरवेश ने कहा, 'चींटी है.'

यह सुनकर योद्धा क्रोध से पागल हो गया. वह चींटी की तलाश में निकलने ही वाला था कि उसे घोड़े की गर्दन पर चींटी दिखाई दी. योद्धा ने चींटी पर तलवार का वार किया. घोड़े की गर्दन उड़ गई. चींटी को कुछ न हुआ. योद्धा को और क्रोध आया. उसने चींटी को जमीन पर चलते देखा. योद्धा ने चींटी पर फिर तलवार का वार किया. खूब धूल उड़ी. चींटी योद्धा के बाएं हाथ पर आ गई. योद्धा ने अपने बाएं हाथ पर तलवार का वार किया, उसका बायां हाथ उड़ गया. अब चींटी उसे सीने पर रेंगती दिखाई दी. वह वार करने ही वाला था कि अचानक दरवेश वहां आ गया. उसने योद्धा का हाथ पकड़ लिया.

योद्धा ने हांफते हुए कहा, 'अब मैं मान गया. बड़े से, छोटा ज्यादा बड़ा होता है.' ■■

सौदेबाजी की पराकाष्ठा

आलोक मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

जीतन राम मांझी ने भाजपा को चुनाव से पहले ही लोहे के चने चबवा दिए. एक हाथ में जहर की कटोरी और दूसरे हाथ में मलाई की कटोरी लेकर मांझी ने दो हफ्ते भाजपा नेताओं को खूब छकाया. संघ-भाजपा नेताओं को हिंदुत्व के आदर्शों को ताक पर रखना पड़ा. रूठे मांझी को अपनी नाव की एक पतवार संभाले रखने के लिए भाजपा को शाह के हाथों मिठाई खिलवानी पड़ी.

भ्रष्टाचार और दलबदल के आरोपों से घिरे जीतन राम मांझी ने बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन का साथ देने के लिए हरसंभव सौदेबाजी करके 20 सीटों पर अपनी उम्मीदवारी मनवा ली. सौदे से एक दिन पहले मांझी का बेटा साढ़े चार लाख रुपए संदिग्ध रूप से ले जाते हुए गिरफ्तार हुआ. चुनावी खर्च के लिए वे करोड़ों रुपयों का इंतजाम अपने उम्मीदवारों के लिए कैसे करेंगे? स्वाभाविक है कि गठबंधन की मजबूरी के नाम पर भाजपा की तिजोरी से हिस्सा मांगेंगे. यह तो शुरुआत है. मांझी के नजदीकी सहयोगी तो दावा कर रहे हैं कि ''वे भाजपा को असली मजा तो चुनाव के बाद चखाएंगे. वर्तमान हालत में किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने की नौबत आ सकती है. तब मांझी को मुख्यमंत्री के रूप में स्वीकारे जाने के लिए भाजपा ही नहीं अन्य विरोधी दलों में भी तोड़-फोड़ कर दावा पेश किया जाएगा.''

ऐसे दावों को जानते हुए भी भाजपा ने मांझी को मनाया. यह बात अलग है कि इससे पहले जगजीवन राम के बाद उभरे सर्वोच्च दलित नेता रामविलास पासवान और उनकी पार्टी को 40 सीटों पर साथ में चुनाव लड़वाने के लिए राजी कर लिया गया. पासवान

> जीतन राम मांझी ने बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा गठबंधन का साथ देने के लिए हरसंभव सौदेबाजी करके 20 सीटों पर अपनी उम्मीदवारी मनवा ली.

लोकसभा के अधिकांश चुनावों में रिकार्ड बनाते रहे हैं और कई सरकारों में महत्वपूर्ण मंत्रालयों के केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं. वह मांझी की सौदेबाजी को अनुचित ठहराते रहे, लेकिन सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं बोले. लेकिन भाजपा तो गठबंधन के सहयोगियों के टकराव का लाभ उठाकर लोकसभा की तरह विधानसभा में अपना स्पष्ट बहुमत लाना चाहती है ताकि अन्य दलों का भविष्य उसकी 'कृपा दृष्टि' पर निर्भर रहे. भाजपा चुनावी राजनीति में किन्हीं नैतिक मानदंडों को आवश्यक नहीं मानती, क्योंकि बिहार विधानसभा का चुनाव अस्तित्व एवं भविष्य की दिशा तय करने वाला है. मांझी ही नहीं हत्या के आरोप में वर्षों तक जेल में रह चुके पप्पू यादव को खुश करने के लिए भी भाजपा को बहुत कुछ समर्पित करना पड़ा है. भाजपा के कई प्रादेशिक नेताओं या सांसदों को अपने शीर्ष नेताओं से मिलने के लिए कुछ दिन इंतजार करना पड़ता है. लेकिन पप्पू यादव के लिए 'दरबार ए खास' में लगातार दस बार दरवाजे खुले और सम्मानजनक आसन तथा विशिष्ट व्यक्तियों को दी जाने वाली 'सिक्योरिटी' भी प्रदान की गई. एक समय था जबकि यही पप्पू यादव अपने राजनीतिक मालिक लालू प्रसाद यादव के समर्थन और भाजपा की अटल-आडवाणी जोड़ी के विरुद्ध आग उगला करते थे. लालू के साथ रहे पप्पू यादव सहित चार पांच ऐसे नामी-बदनामी नेता भाजपा की शरण में आकर 'साधु-संत' घोषित हो गए हैं.

यों भाजपा अकेली नहीं है. दशकों तक सत्ता में रहने वाली कांग्रेस पार्टी को बिहार में 'चारा घोटाले' में बाकायदा अदालत से दंडित लालू प्रसाद यादव की 'कृपा' पर निर्भर रहना पड़ रहा है. लालू यादव आज स्वयं चुनाव लड़ने के योग्य नहीं हैं. वह मुख्यमंत्री भी नहीं बन सकते. लेकिन उनके परिवार के पीछे यादव वोट बैंक का बड़ा हिस्सा होने की आशा कांग्रेस और नीतीश के जनता दल (यू) को है. इसलिए कांग्रेसी नेता लालू को अपनी जनसभाओं में साथ खड़े दिखाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं. लालू आंखें लाल करते हुए हंस भी रहे हैं और अपने बेटे या सहयोगी को कांग्रेस पर 'कृपा' करने के लिए भेज रहे हैं. लालू के अपने समधी मुलायम सिंह यादव भी तो 'सोशलिस्ट सेक्युलर' कहे जाने वाले महागठबंधन से अलग खड़े हो गए हैं. सत्ता में रहते हुए कांग्रेस मुलायम को मनाती डराती रही. एक बार तो मुलायम सिंह ने सार्वजनिक रूप से कह दिया था कि उन्हें कांग्रेस सरकार सी.बी.आई. की तलवार से डराती है. यही वजह है कि अब नीतीश-लालू गठबंधन से अलग होने पर आशंका जताई जा रही है कि केंद्र में भाजपा आने के बावजूद सी.बी.आई. की फाइलें तो रिकार्ड में हैं ही. समाजवादी पार्टी द्वारा बिहार में नए गठबंधन के साथ चुनावी मैदान में उतरने का अप्रत्यक्ष लाभ भाजपा को ही मिलने वाला है.

नीतीश का दामन छोड़ कर आए उपेंद्र कुशवाह भी मांझी की तरह अस्थिरता के दौर में मुख्यमंत्री बनने का सपना संजोए हैं. यदि अनुपम खेर के टीवी शो 'कुछ भी हो सकता है' की तर्ज पर कल्पना करें, तो देर-सवेर दिल्ली के सिंहासन पर भी क्या कोई मांझी या कुशवाहा दावा पेश कर भाजपा का किला ध्वस्त कर सकते हैं? ■■

कदम-कदम पर होती है हिंदी की उपेक्षा

गौरीशंकर राजहंस
पूर्व सांसद एवं पूर्व राजदूत

हाल ही में भोपाल में 'विश्व हिंदी सम्मेलन' हुआ जिसमें भारत और विदेशों के अनेक विद्वानों ने भाग लिया. सभी एकमत थे कि जब तक हम अपने घर में हिंदी को सम्मान नहीं देंगे शेष दुनिया हिंदी का महत्व नहीं समझेगी. दिल्ली देश की राजधानी है जहां 'पॉश कॉलोनियों' में देश के विभिन्न राज्यों के लोग आकर बसे हैं और संपन्न हो गए हैं. देश की संपन्नता के साथ-साथ उनकी अपनी भी संपन्नता हुई है. मैं स्वयं दक्षिण दिल्ली की एक 'पॉश कॉलोनी' में रहता हूं. यह देखकर घोर आश्चर्य होता है कि जो लोग हिंदी भाषी राज्यों से आकर दिल्ली में बस गए हैं, चाहे नौकरी के कारण या व्यापार के कारण, वे भी अपने घरों में बच्चों से अंग्रेजी में बात करते हैं. यही नहीं, पड़ोसियों से भी अंग्रेजी में ही बात करते हैं. मैंने कई बार उन्हें टोका तो उनका जवाब था कि जब तक बच्चे अंग्रेजी भाषा में दक्ष नहीं होंगे और कॉन्वेंट में उनकी शिक्षा नहीं होगी तब तक जिंदगी की दौड़ में वे सफल नहीं हो पाएंगे. उनका कहना था कि 12वीं की पढ़ाई समाप्त कर जब वे इंजीनियरिंग या मेडिकल में एडमिशन के लिए टेस्ट देंगे तो वहां तो उन्हें सब कुछ अंग्रेजी में ही करना होगा. उनका कहना था कि दिल्ली जैसे शहर में और भारत के सभी बड़े शहरों में कदम-कदम पर अंग्रेजी का महत्व है. उनका यह भी कहना था कि चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा 'अंग्रेजी दां' लोग जीवन की दौड़ में आगे बढ़ जाते हैं. यहां तक कि बड़ी बहुराष्ट्रीय भारतीय कंपनियों में भी सारा कारोबार अंग्रेजी में होता है और वहां के अफसर अपने जूनियर अफसरों से अंग्रेजी में ही बात करते हैं. आज जब सर्वत्र अंग्रेजी छाई हुई है तो हम लोग हिंदी का दामन पकड़ कर केवल पिछड़ ही जाएंगे. इसलिए उन्होंने हिंदी को कम महत्व देकर अंग्रेजी को वरीयता दी है.

निष्पक्ष रूप से सोचा जाए तो उनकी दलील में दम है. आजादी के इतने वर्षों बाद भी सर्वत्र अंग्रेजी छाई हुई है और हिंदी भाषा भाषी छात्र जब कहीं एडमिशन लेने जाते हैं या किसी नौकरी के लिए इंटरव्यू देते हैं तो दुर्भाग्यवश वे पिछड़ जाते हैं. कोई माने या न माने उन्हें द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता है और यह कहकर उनकी उपेक्षा होती है कि वे मध्यमवर्गीय परिवारों से हैं. यह बात दुखद अवश्य है. परंतु सत्य का हमें सामना करना ही होगा.

कई वर्ष पहले जब उच्च शिक्षा के लिए मैं अमेरिका गया था तो मुझे यह देखकर हैरानी होती थी कि हिंदी भाषी राज्यों के लोग जो नौकरी करने या उच्च शिक्षा प्राप्त करने या कोई व्यवसाय करने अमेरिका आए थे वे भी अपने घरों में अपने बाल-बच्चों से अंग्रेजी में ही बात करते थे. यही नहीं, हिंदी भाषी राज्यों से आए हुए लोगों से भी वे अंग्रेजी में ही बात करते थे. मुझे यह सब देखकर शुरू में घोर हैरानी होती

> यदि हम घर में हिंदी को सम्मान नहीं देंगे तो विदेशों में हिंदी का सम्मान कैसे होगा? यह अत्यंत गंभीर विषय है.

थी. हद तो तब हो गई जब सभी राज्यों से खासकर हिंदी भाषी राज्यों से आने वाले लोग दिवाली महोत्सव में आपस में बात अंग्रेजी में ही करते थे. उनके बाल-बच्चे तो स्वाभाविक रूप से अंग्रेजी ही बोलते थे. ऐसा लगता था कि हिंदी में बोलने से उन्हें हीनता का अनुभव होता था. परंतु आश्चर्य तब होता था जब दिवाली महोत्सव या इस तरह के अन्य महोत्सवों में वीडियो से हिंदी फिल्म दिखाई जाती थी. मैं दक्षिण भारत से आए हुए लोगों से पूछता था कि जब आप हिंदी नहीं बोलते हैं और कहते हैं कि आप हिंदी नहीं जानते हैं तो ये हिंदी फिल्म कैसे देखते और समझते हैं? उनका जवाब था कि हिंदी फिल्म तो सारे भारत के लोग समझते हैं. कहने का अर्थ है कि हिंदी सब की समझ में आती है और वे आसानी से हिंदी बोल भी सकते हैं. परंतु किसी दुराग्रह के कारण हिंदी में बातचीत नहीं करते हैं. यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है और विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को इस दिशा में गंभीर प्रयास करना चाहिए. यदि हम घर में हिंदी को सम्मान नहीं देंगे तो विदेशों में हिंदी का सम्मान कैसे होगा? यह अत्यंत गंभीर विषय है. ■■

आजादी की धरोहरों का चेहरा न बदलें

कुलदीप नैयर
जाने-माने स्तंभकार

नई दिल्ली में तीन मूर्ति पर बने जवाहरलाल नेहरू म्यूजियम को 'आधुनिक' बनाने के भाजपा सरकार के फैसले से लोगों में डर की भावना दिखाई दे रही है. भाजपा ने सफाई दी है कि वर्तमान म्यूजियम (संग्रहालय) राष्ट्रीय आंदोलन का सिर्फ नेहरू वाला पक्ष

> क्यों नहीं भाजपा एक अलग म्यूजियम बनाती है जहां वह इतिहास को उस रूप में रखे जिस तरह से वह इसे रखना चाहती है.

सामने लाता है, उसकी पूरी कहानी नहीं. विडंबना है कि संग्रहालय को आधुनिक बनाने की मांग उन लोगों ने की है जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में जरा भी योगदान नहीं किया है.

संस्थानों के भगवाकरण के पीछे भाजपा के मन में क्या है? पार्टी ने इसी तरह का प्रयास उस समय किया था जब अटल बिहारी वाजपेयी सत्ता में थे, लेकिन उन्होंने इतिहास की दोबारा व्याख्या करने के इस प्रयास का मजबूती से विरोध किया था. वह आजादी हासिल करने में नेहरू के योगदान को मानते थे और उन्होंने इसका पूरा श्रेय नेहरू को दिया.

राजग शासन में नेहरू म्यूजियम को नया रूप देने का मतलब है इतिहास में पुराने पड़ गए विचारों को ठूंसना. नेहरू ने आजादी के बाद राष्ट्र को गढ़ने का काम किया और उसे एक वैज्ञानिक मिजाज दिया. नेहरू का सबसे बड़ा योगदान सेक्युलरिज्म की सोच है. बंटवारे के बाद जब पाकिस्तान ने इस्लामिक राज्य बनाने का निर्णय लिया, उन्होंने भारत को सेक्युलर बनाया. क्यों नहीं भाजपा एक अलग म्यूजियम बनाती है जहां वह इतिहास को उस रूप में रखे जिस तरह से वह इसे रखना चाहती है.

मैं कुछ दिनों पहले पुणे गया था और यह देख कर बेचैन हुआ कि उस आगा खां पैलेस को एक पर्यावरण पार्क में बदल दिया गया है जहां ब्रिटिश शासकों ने आजादी के आंदोलन की प्रेरक हस्तियों महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और मौलाना अबुल कलाम आजाद को कैद में रखा था. मुझे पार्कों से कोई शिकायत नहीं है. लेकिन राष्ट्र के खून से पवित्र बन गए स्थानों को उसी रूप में बनाए रखना चाहिए जैसा वे थे ताकि नई पीढ़ी उसे अपने वास्तविक रूप में देख सके.

कितनी भी ईमानदारी से सजावट हुई हो, यह असली भावना को बुझा देती है. इसके विपरीत, अमृतसर के जलियांवाला बाग को उसी रूप में सुरक्षित रखा गया है जैसा वह था. यहां शहादत का माहौल मौजूद है और अभी भी कुएं का स्थान मुख्य बना हुआ है. इसे देख कर कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि किस तरह ब्रिटिशों के नेतृत्व वाली फौज की ओर से की जा रही लगातार फायरिंग से बचने के लिए लोग कुएं में कूद गए होंगे.

जलियांवाला बाग जैसे स्थान हमें राष्ट्रीय संघर्ष के दर्द तथा उसकी आवाज और इस लड़ाई में सब कुछ न्योछावर करने वालों की याद दिलाते हैं.■■

नजर के पार

नदियां जोड़ने का साकार होता सपना

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

केन और बेतवा नदियों को जोड़ने का सपना साकार होता दिख रहा है. उम्मीद है कि नदियों को जोड़ने के इस महाप्रयोग की आधारशिला दिसंबर में रख दी जाएगी. नदी जोड़ो कार्यक्रम मोदी सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना है. इस परियोजना के तहत उत्तर प्रदेश के हिस्से में आने वाली पर्यावरण संबंधी बाधाओं को दूर कर लिया गया है. मध्य प्रदेश में जरूर अभी भी पन्ना राष्ट्रीय उद्यान बाधा बना हुआ है. चूंकि मध्य प्रदेश और केंद्र में एक ही दल भाजपा की सरकारें हैं, लिहाजा उम्मीद है कि आ रही बाधाएं जल्द दूर कर ली जाएंगी.

नर्मदा-क्षिप्रा को जोड़ने की परियोजना का सफल क्रियान्वयन राष्ट्रीय नदी जोड़ो परिकल्पना की एक छोटी, किंतु बेहद अहम कड़ी थी. भविष्य में बड़ी नदियों को जोड़ने की प्रेरणा इसी परियोजनाओं से मिली है. इन नदियों के जुड़ने के बाद म.प्र. देश का ऐसा पहला राज्य बन गया है, जिसने नदियों को जोड़ने का ऐतिहासिक काम की बुनियाद रख दी है. जो राज्य अपने राज्य में जल की बहुलता होने के बावजूद जल संकट झेल रहे हैं, वे अपने स्तर पर अपने राज्यों में इस अनूठी परिकल्पना से प्रेरित होकर राज्य की नदियों को जोड़ने के काम को आगे बढ़ा सकते हैं. क्योंकि इस परियोजना को पूरा करने के लिए केंद्र से कोई मदद नहीं ली गई थी.

केन नदी जबलपुर के पास कैमूर की पहाड़ियों से निकलकर 427 कि.मी. उत्तर की ओर बहने के बाद बांदा जिले में यमुना नदी में जाकर गिरती है. वहीं बेतवा नदी मध्य प्रदेश के रायसेन जिले से निकलकर 576 कि.मी. बहने के बाद उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में यमुना में मिलती

है. यानी ये दोनों ऐसी नदियां हैं, जो दोनों ही प्रदेशों में ज्यादा पानी बरसने पर बाढ़ और कम पानी बरसने पर सूखे का कारण बनती हैं. इस लिहाज से यदि ये नदियां परस्पर जोड़ दी जाती हैं तो इन दोनों प्रांतों को बाढ़ और सूखे से राहत मिलने की उम्मीद बढ़ जाएगी.

पहली बार अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार में इस योजना को मूर्त रूप देने की योजना बनी. परंतु एक कार्यबल बनाने के सिवा वाजपेयी भी योजना का क्रियान्वयन नहीं करा सके. दरअसल, योजना के औचित्य पर इतने सवाल खड़े कर दिए कि इसे शुरू कर पाना संभव ही नहीं हो पाया. खासकर पर्यावरणविद नदियों के प्राकृतिक बहाव में किसी भी तरह के कृत्रिम हस्तक्षेप के विरुद्ध थे. इसके साथ ही इस योजना के अमल में बड़ी मात्रा में धन जुटाने की और भूमि अधिग्रहण जैसी चुनौतियां भी पेश आईं. इन्हीं विवादों के क्रम में यह योजना उच्चतम न्यायालय में विवाद के हल के लिए पहुंचा दी गई. अंततः 28 फरवरी 2012 को न्यायालय ने सरकार को नदी जोड़ो परियोजनाओं को चरणबद्ध तरीके से अमल में लाने की हरी झंडी दी. इस बाधा के दूर होने पर नर्मदा और क्षिप्रा को जोड़ने की पहली इच्छाशक्ति मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिखाई और उन्होंने तय समय-सीमा में दो नदियों को जोड़ने के स्वप्न को साकार किया. अब मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के भूगोल में बहने वाली केन और बेतवा नदियों को जोड़ने पर सहमति दोनों प्रदेशों के बीच बनी है. जल्दी ही इस परियोजना पर अमल शुरू होने की उम्मीद है. इसके बाद नदियों को जोड़ने का सिलसिला अनवरत चल निकलेगा. ■■

तोल बोल

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने अपना आखिरी वादा भी पूरा कर दिया लेकिन मोदी सरकार अपना पहला वादा भी पूरा नहीं कर सकी.

■ आजम खां, वरिष्ठ मंत्री, उ.प्र.

मैं इन बातों की परवाह नहीं करती कि चंद लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं. मुझे चाहने वालों की संख्या ऐसे लोगों से बहुत ज्यादा है.

■ सानिया मिर्जा, टेनिस खिलाड़ी

gñWmH¾ gmXH¾ :
nd. OdhÑabmb XS॥
M`a Z, E{SQ¾{a`b ~¬S :
{dO¯ XS॥
E{SQa-BZ-Mr\¾ :
arOB XS॥
gmXH :
{dH¾rg {_ I ★
★ nr. Aza. ~r. HbZZ H¾ AZgra gnU gmXH¾` Xo{`Ed H¾ {bE {Oâ_Xra.

© लोकमत समाचार _ àHb{eV g^r gr_Jr H¾ gdr{YH¾a bmH¾_V r{S`॥ àr`dO {b. H¾ mrg ga{j V h. bmH¾_V _r{S`॥ àr`dO {b. H¾ {bE _ÐH¾ Ed àH¾eH¾ बालाजी मुले Ûrar bmH¾_V _r{S`॥ àr. {b., {Ibr{O H¾. 192, 207, 208 E _. A¤8. Sr. gr. B\S{fO` b E{a`॥, ~Or~rar, ZxJna _{ÐV Ed bmH¾_V ^dZ n. OdhÑabmb ZhÑ¾ _¾J, ZxJna _ àHb{eV.

P.O.BOX NO. 230 R.N.I. No. 47101/89
XaUd{Z : 0712-2423527 (7 bmB\'g) \¾Sg : 6618555
Email : gmXH¾` : lsedit.ngp@lokmat.com
{dkmZ : advt.ngp@lokmat.com {dVaU : circ.ngp@lokmat.com

इतिहास पर नजर 16 सितंबर

आज ही के दिन 1986 में दक्षिण अफ्रीका की एक सोने की खदान में फंस जाने से कम से कम 177 लोगों की मौत हो गई थी. पूर्वी ट्रांसवाल इलाके में स्थित इस सोने की खदान की सुरंगों में जहरीली गैस फैल गई थी और इसी के कारण खदान में काम करने वाले लोगों की मौत हो गई थी. सोने की इस खदान में दुर्घटना तब हुई जब वेल्डिंग कर रहे एक खनिक के यंत्र से निकली चिनगारी से आग भड़क उठी. दुनिया भर में खदानों के इतिहास में हुआ ये सबसे भीषण हादसा बताया गया था. हादसे के बाद दक्षिण अफ्रीका के खनिकों की यूनियन ने किनरोस माइंस के मालिकों पर लापरवाही का आरोप लगाया था. ■■

- 1795-ब्रिटेन ने दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन पर कब्जा किया.
- 1848-फ्रांसीसी उपनिवेश से दास प्रथा खत्म की गई.
- 1906-रोनाल्ड एमंडसन ने दक्षिणी ध्रुव की खोज की.
- 1920-न्यूयॉर्क के वाल स्ट्रीट में बम विस्फोट में 30 लोगों की मौत.
- 1941-हिटलर ने प्रत्येक जर्मन नागरिक के बदले 100 यूगोस्लावियाई लोगों को मारने के आदेश दिए.
- 1977-जयपुर-अतरौली घराने की भारतीय शास्त्रीय गायिका केसरबाई केरकर का निधन.
- 1992-पाकिस्तान में बाढ़ से 900 लोगों की मौत.

पाठकों के पत्र

गरीबों की सेवा में ही पुण्य

संत विनोबा भावे का मानना था कि आज हमारे सामने भूखा भगवान खड़ा है. वह भगवान ऐसा है, जो खुद दूध दुहता है, पर उसे वह पीने को नहीं मिलता. वह फलों के बगीचों में काम करता है, पर उसे फल चखने को नहीं मिलते. वह गेहूं के खेत में काम करता है, पर उसे रोटी खाने को नहीं मिलती. इस तरह भूखा, प्यासा और बिना घर वाला भगवान हमारे सामने खड़ा है. वह कहता है कि हमें खिलाओ, कपड़े दो, हम ठंड में ठिठुर रहे हैं. गहरे एवं गूढ़ विचारों को किसी सूत्र में व्यक्त करना विनोबा की मूल विशेषता थी. उनकी शिक्षाएं आज ज्यादा प्रासंगिक हैं.

■ अजय त्रिवेदी, इंदौर

विचारों को भूलना उचित नहीं

पैसे और सत्ता संगठन की ताकत पर आंख मूंदकर भरोसा करने वाली आज की दुनिया विचारों को शायद भूलती जा रही है. इसी से आज की दुनिया विचारों से ज्यादा पैसे, सत्ता और संगठन की ताकत पर आत्ममुग्ध है. लेकिन यह आत्ममुग्धता लंबे समय तक टिकने वाली नहीं है.

■ अनुज धर, होशंगाबाद

आप भी अपने पत्र हमें lsedit.ngp@lokmat.com पर मेल कर सकते हैं या डाक पते पर भेज सकते हैं.

कौन-सी धारा?

हास्य

एक यशःप्रार्थी युवा कवि ने एक बार ढेर सारी कविताएं लिखीं और उन्हें प्रकाशित करवाने की इच्छा से अपने समय की एक प्रसिद्ध पत्रिका के संपादक को अपनी निम्नलिखित टिप्पणी के साथ भेज दीं-

''महोदय, मैंने ये कविताएं मात्र भावनाओं के आवेश में आकर लिखी हैं. मैं यह नहीं जानता कि ये कविताएं साहित्य की किस धारा के अंतर्गत आती हैं, कृपया आप इन्हें पढ़कर मुझे इस बारे में बताएं तो आपका अनुग्रह होगा.''

दुर्भाग्य से उन कविताओं में संपादक महोदय को कुछ भी सार्थक नजर नहीं आया. उन्होंने कवि महाशय को उत्तर भिजवाया-

''आपकी कविताएं ध्यान से पढ़ने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि ये कविताएं केवल गंगा की धारा के ही उपयुक्त हैं, इसलिए आप कृपया इन्हें वहीं डाल दें. इससे इन कविताओं का भी भला होगा और समाज का भी.''■■